काली मृदा / Black soil

- ये मृदा लावा के विखंडन से बनती है

This soil is formed by the decomposition of lava.

- ये मृदा लगभग भारत के 16.6% क्षेत्रफल में फैली है, ये कपास की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

This soil is spread of over about 16.6% of the area of India. this soil is famous for the cultivation of cotton.

- इस मृदा में जल धारण क्षमता अधिक होती है।

This soil has high water holding capacity.

- ये मृदा गीली होने पर चिपचिपी तथा सूखने पर ईंट की भाँति कठोर हो जाती है, तथा इसमें दरारें पड जाती है, अतः कहा जाता है, कि इस मृदा में स्वतः जुताई की सुविधा उपलब्ध है।

This soil become sticky when wet and hard like a brick when dry and crack fall in it, so it is said that the facility of self plowing is available in this soil.

- काली मिट्टीयों को स्थानीय रूप से रेगुर व उ०प्र० में केवल काली कपास की मिट्टी तथा अंतराष्ट्रीय रूप से ऊष्ण कटिबंधीय चरनोजम कहा जाता है।

Black soil are locally known as 'Regur' and Kanel black cotton soil in U.P. and internationally known as 'Tropical chernozem.'

- सर्वाधिक विस्तार (Maximum extention)
  महाराष्ट्र (Maharashtra)

o इस मिट्टी का विस्तार लगभग 5.46 लाख वर्ग km क्षेत्र (देश के 16.6% भू-क्षेत्र) पर है। यह भारतीय मृदा का तृतीय विशालतम वर्ग है।

This soil is spread over an area of about 5.46 lakh sq km (16.6% of the country's land area.) It is the third largest class of Indian soil.

o इनका विकास महाराष्ट्र (सर्वाधिक मात्रा में), पश्चिमी मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, आंध्र प्रदेश कर्नाटक तमिलनाडू एवं उत्तर-प्रदेश पर, दक्कन लावा (बेसाल्ट) के अपक्षय से हुआ है।

It have been developed from the weathering of Deccan lava (basalt) over Maharashtra (Most abundant), western Madhya pradesh, Gujarat, Rajasthan, Andhra Pradesh, Karnataka, Tamilnadu and Uttar pradesh.

o ये मिट्टी सामान्यतः लोहे, चूने, कैल्शियम, पोटाश, एल्युमिनियम, तथा मैग्नीशियम कार्बोनेट से समृद्ध होती है।

This soil is generally rich in iron, lime, calcium, Potash, Aluminium, and Magnisium Carbonate.

o इनमे नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा जैविक पदार्थों की कमी होती है।

lack of Nitrogen, fasforus and organic matter are found in this soil.

o इनमे उर्वरता अधिक होती है, अतएव ये जडदार फसलो जैसे - कपास, तूर के फल तथा चना, सोयाबीन तिलहन मोटे अनाजों, सफोला आदि की खेती के लिए अयुक्त रहती है।

ROJGAR WITH ANKIT

लैटेराइट मृदा

- यह लाल मिट्टी का प्रकार है / It is type of Red soil.
- यह उन क्षेत्रों में मिलती है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 200 cm या उससे अधिक हो।

It is found in those areas where the average annual rainfall is 200 cm or more.

- अधिक वर्षा के कारण मिट्टी के पोषक तत्व पानी में घुलकर जमीन द्वारा सोख लिए जाते हैं। तथा मृदा के पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, इस क्रिया को अपक्षालन कहा जाता है।

Due to excessive rainfall, the nutrients of the soil dissolve in water and are absorbed by the ground. and there is diticiency nutrients in the soil.
This process is called leaching.

फसलें / वृक्ष = चाय, कहवा, नारियल आदि।
Crops / Trees = Tea, Coffee, Coconut etc.
भारत में क्षेत्रफल (लैटेराइट मृदा) = 3.7 %
(Area in India (laterite soil)

- यह मृदा उष्णकटिबंधीय वर्षा के कारण हुए तीव्र निक्षालन का परिणाम है, वर्षा के साथ चूना व और सिलिका तो निक्षालित हो जाते हैं, परंतु लोहे के आक्साइड और एल्युमिनीयम के यौगिक से भरपूर मृदा शेष रह जाती है।

This soil is result of intense leaching caused by topical rains. lime and silica are leached with rain but soil is rich in iron oxide and aluminium compond remains.

- उच्च ताप में आसानी से पनपने वाले जीवाणु ह्यूमस की मात्रा को तेजी से नष्ट करते हैं, इस मृदा में जैव पदार्थ, नाइट्रोजन, फास्फेट और कैल्शियम की कमी होती है। लौहे आक्साइड और पोटाश की अधिकता होती है।

Bacteria which grow easily in high temperature destroy the amount of Humus rapidly. so this soil is dificient in organic matter, nitrogen, Phasphate and calcium and is rich in iron oxide and Potash.

- लैटेराइट मृदा कृषि के लिए अधिक उपजाऊ नहीं है। फसलो के लिए उपजाऊ बनाने के लिए इस मृदा में खाद और उर्वरको की भारी मात्रा डालनी पडती है।

laterite soil is not very fertile for agriculture. In order to make this soil fertile for crops, a large amount of manure and fertilizers have to be applied.

प्रमुख क्षेत्र = केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मेघालय आदि

पर्वतीय मृदा

प्रमुख क्षेत्र ⇒ कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश आदि।

Mayor areas ⇒ Kashmir, Laddakh, Himachal Pradesh, Uttarakhand, sikkim, Arunachal Pradesh.

प्रमुख फसलें ⇒ चाय, कहवा, सेब आदि।

Mayor crops ⇒ Tea, Coffee, Apple etc.

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में इस मृदा मे स्थानांतरणशील कृषि/झूम खेती की जाती है।
  Shifting cultivation [Jhoom agriculture] is Practiced in this soil in the north-Eastern region.
- इस मृदा को वन मृदा भी कहा जाता है।
  This soil is also called forest soil.

मरूस्थलीय मृदा
Desert Soil

प्रमुख क्षेत्र ⇒ राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा आदि

Major Region ⇒ Rajasthan, Gujrat, Punjab, Hariyana etc

- बालू की प्रधानता /
  -Predominance of sand

- पोषक तत्वों की कमी, सिंचाई सुविधा की कमी के कारण मृदा बहुत कम उपजाऊ है/
  - The soil is very less fertile due to the Predominence of ~~soil~~ sand, lack of nutrients lack of irrigation facility.

प्रमुख फसलें ⇒ मोटा अनाज, ज्वार, बाजरा आदि/

Major crops ⇒ Coarse grains, Jowar, Bajra etc.

- शुष्क मृदा का रंग लाल से लेकर भूरा होता है। यह सामान्यतः संरचना से बलुई और प्रकृति से लवणीय होती है।

The colour of dry soil ranges from red to brown. It is generally sandy in composition and salin in nature.

- कुछ क्षेत्रों की मृदाओं में नमक की अधिक मात्रा होने के कारण पानी की वाष्पीकृत करके नमक प्राप्त किया जा सकता है।

Salt can be obtained by evaporating water due to high salt content in the soils of some regions.

- शुष्क जलवायु, उच्च तापमान और तीव्रगति से वाष्पीकरण के कारण इस मृदा में नमी और ह्यूमस कम होते है। इसमें नाइट्रोजन अपर्याप्त और फास्फेट सामान्य मात्रा में होता है।

Due to dry climate, high temperature and rapid evaporation this soil is low in moisture and humus, deficient in nitrogen and moderate in Phosphate.

- इस मृदा में नीचे की ओर चूने के मात्रा के बढ़ते जाने के कारण निचले संस्तरों में की परत पाई जाती है।

Due to increase the amount of lime towards the bottom in this soil, layers of Phebles are found in lower layer.

- यह मृदा विशिष्ट शुष्क स्थलाकृति वाले पश्चिमी राजस्थान में अधिक विकसित हुई है।

This soil is more developed in western Rajasthan having typical dry topography.

ROJGAR WITH ANKIT

- यह मृदा अनुर्वर है, क्योंकि इसमे ह्यूमस और जैव पदार्थ कम मात्रा में पाए जाते हैं।

This soil is infertile, because Humus and organic matter are found in less quantity in it.